कवर चित्र नं. 1 (त्रिमूर्ति):-

'शिव' का अर्थ है- **'कल्याणकारी'**। परमपिता+परमात्मा का यह नाम इसलिए है कि सृष्टि-चक्र के अंत में जब मनुष्यात्माएँ तथा प्रकृति, पतित एवं तमोप्रधान बन जाती हैं तो परमधाम निवासी परमपिता+परमात्मा शिव ज्योतिर्बिन्दु, मनुष्य शरीर का आधार लेकर मनुष्यात्माओं और प्रकृति , दोनों को पावन एवं सतोप्रधान बनाते हैं। उनके इस कर्तव्य की यादगार में ही शिवरात्रि अर्थात् परमपिता के शब्दों में शिवजयंती का त्यौहार मनाया जाता है। सुप्रीम सोल शिव किसी पुरुष के बीज से या माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते। वे प्रजापिता द्वारा मनुष्य-सृष्टि रूपी वृक्ष के चैतन्य बीज हैं और जन्म-मरण तथा कर्मबंधन रहित हैं। अतः वे अपना कर्तव्य करने के लिए किसी साधारण वृद्ध मनुष्य के तन में दिव्य प्रवेश करते हैं। इसे ही **'परमपिता+परमात्मा का दिव्य अवतरण'** कहा जाता है; क्योंकि उनका अपना शरीर नहीं होता है। **उनका दिव्य कर्तव्य** तीन चरणों में सम्पन्न होता है- **स्थापना, विनाश और पालना**। इन तीन कर्तव्यों के लिए वे अव्यक्त स्थिति धारण करने वाली तीन साकार देवात्माओं का आधार लेते हैं। वे देवात्माएँ हैं- **ब्रह्मा, शंकर तथा विष्णु**। मनुष्य-सृष्टि रूपी रंगमंच पर उनके दिव्य अवतरण के बाद कौन-सी तीन आत्माएँ ब्रह्मा, शंकर एवं विष्णु के पात्रों का अभिनय करती हैं, यह जानने के लिए हमें सन् 1936-37 में परमपिता+परमात्मा के अवतरण से लेकर अब तक की घटनाओं को जानना ज़रूरी है।

Cover Picture No.1
कवर चित्र नं. 1

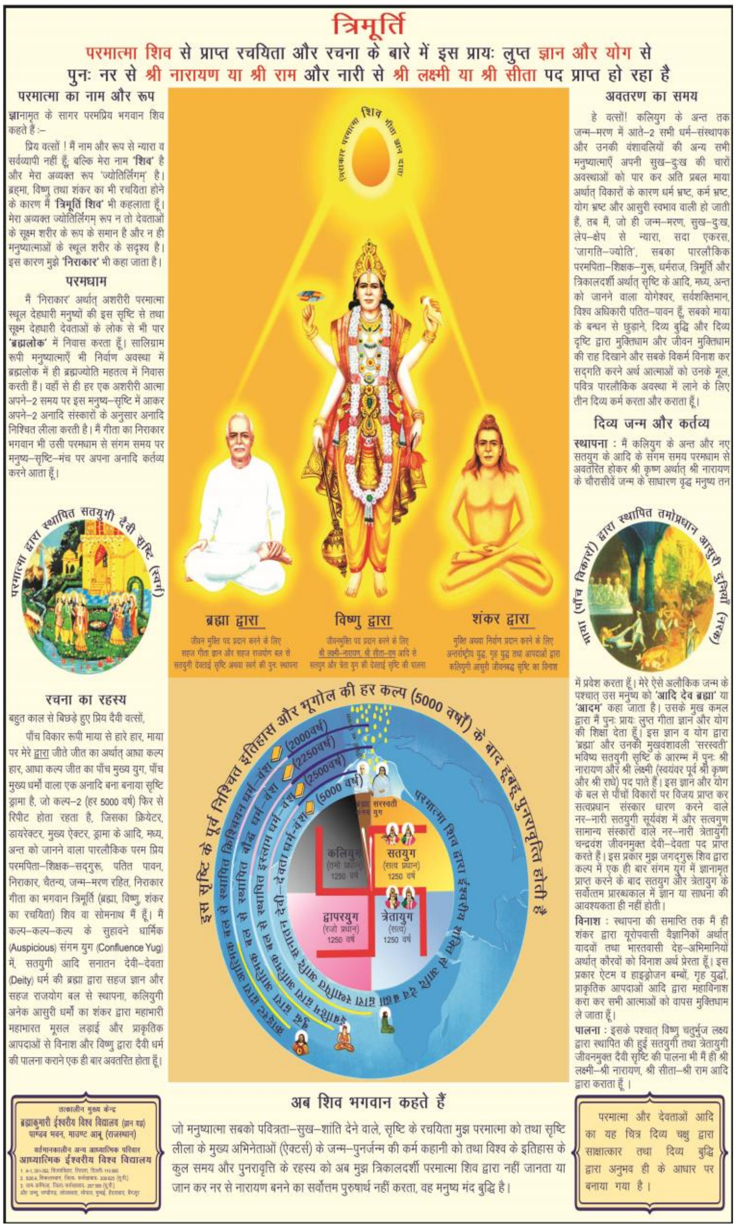

परमपिता+परमात्मा का यह कार्य सन् 1936/37 में पाकिस्तान के **सिंध-हैदराबाद** शहर से प्रारम्भ हुआ, जब उन्होंने **दादा लेखराज** नामक एक विख्यात हीरों के व्यापारी को विष्णु चतुर्भुज, नर्क की पुरानी दुनिया के विनाश और स्वर्ग की नई दुनिया की स्थापना का साक्षात्कार कराया; किन्तु वे उन दिव्य साक्षात्कारों का अर्थ समझ न पाए। उन्होंने अपने गुरुओं से इसका अर्थ पूछा; किन्तु भगवान की लीला वे देहधारी गुरु लोग क्या समझें? फिर वे (दादा लेखराज) वाराणसी के प्रकाण्ड पण्डितों से इसका समाधान पाने के लिए गए; किंतु उन्हें वहाँ भी

निराशा ही हाथ लगी। वहाँ भी उन्हें साक्षात्कार होते रहे जिसकी तस्वीरें वे गंगा के घाटों पर बनी दीवारों पर बनाते रहते थे। जब कोई भी उनकी समस्या का समाधान न कर सका तो उन्हें **कलकत्ता में रहने वाले** अपने **भागीदार (सेवकराम)** की याद आई। उस भागीदार की निष्ठा व ईमानदारी से प्रभावित होकर ही उन्होंने उसे अपनी कलकत्ता स्थित हीरों की दुकान की ज़िम्मेवारी सौंप दी।

बाद में दादा लेखराज कलकत्ता गए; किंतु सीधे उस भागीदार को अपने साक्षात्कारों का वर्णन करने के बजाय उन्होंने अपनी नज़दीकी संबंध की माता को सुनाया और उस माता ने दूसरी माता को सुनाया, जो बोलने, सुनने, सुनाने में सिद्धहस्त थी। बाद में जब सुनने-सुनाने में सिद्धहस्त माता ने प्रजापिता (भागीदार) को सुनाया, उसी समय ज्योतिबिंदु परमपिता+परमात्मा शिव ने उसी माता और प्रजापिता (भागीदार) में साथ-ही-साथ उनके अनजाने ही प्रवेश कर लिया और इस प्रकार उस वाक् सिद्धहस्त माता द्वारा साक्षात्कारों का वर्णन **सुनने-सुनाने** की प्रक्रिया द्वारा **'भक्तिमार्ग'** की तथा भागीदार द्वारा ज्ञान **समझने-समझाने** की प्रक्रिया द्वारा **'ज्ञानमार्ग'** की नींव पड़ गई।

इस प्रकार चूँकि परमपिता शिव ने सर्वप्रथम उन दोनों माताओं के समक्ष भागीदार में प्रवेश कर विश्व-परिवर्तन का कार्य आरम्भ किया, इसलिए वे शिव ज्योतिर्बिन्दु ही भविष्य में ब्रह्मा, शंकर और विष्णु- इन त्रिदेवों द्वारा संसार में अगला जन्म लेकर त्रिमूर्ति शिव के नाम से प्रसिद्ध होते हैं।

कुछ समय के बाद दादा लेखराज ने भागीदार और नज़दीकी संबंध की माता के प्रैक्टिकल पार्ट और साक्षात्कारों के अनुभव से अपने वर्तमान जन्म के पार्ट 'ब्रह्मा' के स्वरूप और भविष्य सतयुग में **'कृष्ण'** के रूप में प्रथम महाराजकुमार के स्वरूप को भी पहचान लिया।

इन घटनाओं के अनुसार परमपिता का कार्यक्षेत्र एवं परिवार पहले सिंध-हैदराबाद, फिर कलकत्ता और तत्पश्चात् कराची में स्थानान्तरित हुआ, पहले कुछ वर्षों तक सिंध-हैदराबाद में भागीदार द्वारा और फिर कराची में माताओं के द्वारा परमपिता ने ज्ञान और राजयोग की शिक्षा दी। प्रारम्भ में यह परिवार **'ओम मंडली'** के नाम से जाना जाता था; क्योंकि ओम की ध्वनि लगाते ही सभी ध्यान में चले जाते थे तथा वैकुण्ठ और कृष्ण का साक्षात्कार करते थे। संयोगवश सन् **1946-47** तक परमपिता+परमात्मा के इस अलौकिक परिवार के तीन सदस्यों- भागीदार, आदि माता तथा नज़दीकी संबंध की माता का देहावसान हो गया। तत्पश्चात् परमपिता ने दादा लेखराज के द्वारा विश्व-परिवर्तन का कार्य जारी रखा। उस समय मौजूद कन्या-माताओं में एक 'ओमराधे' नामक कन्या भी थी, जिन्होंने अपने वर्तमान जन्म के 'सरस्वती' नामक पार्ट का और भविष्य सतयुग में 16 कला सम्पन्न राधा के रूप में प्रथम महाराजकुमारी के स्वरूप का भी निश्चय कर लिया। सन् 1951 में यह परिवार पाकिस्तान से माउण्ट आबू (राजस्थान) स्थानान्तरित हुआ। इसी दौरान ओम मंडली का नाम 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' पड़ा और प्रचार-प्रसार आरम्भ किया। ज्योतिर्बिंदु शिव ने दादा लेखराज (उर्फ़ ब्रह्मा) के शरीर में प्रवेश कर सन् 1951 से 18 जनवरी, 1969 तक जो महावाक्य उच्चारे, उन्हें **'ज्ञान मुरली'** कहा जाता है। सन् 1947 से 1965-68 तक ब्र०कु० ओमराधे एवं दादा लेखराज ने जगदम्बा और प्रजापिता ब्रह्मा के कार्यवाहक पात्रों का अभिनय किया। 18 जनवरी, 1969 में दादा लेखराज के देहावसान के बाद ब्र०कु० प्रकाशमणि ने इस संस्था की बागडोर सम्भाली और उनके देहावसान के बाद उनके स्थान पर दीदी जानकी देश-विदेश में फैली इस संस्था की मुख्य संचालिका बनीं। ब्रह्माकुमारी संस्था के सदस्यों ने समझा कि परमपिता शिव का अब कोई साकार माध्यम नहीं रहा और हमें ही स्वर्ग की स्थापना करनी है। मात-पिता के रूप में परमात्म पालना के बिना इस ईश्वरीय परिवार की वही स्थिति हो गई, जैसे कि लौकिक दुनिया में मात-पिता के देहावसान पर अनाथ बच्चों की होती है। संस्था के सदस्यों की संख्या में तो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई; किन्तु उनकी गुणवत्ता वह नहीं थी जो संस्था के शुरुआत के वर्षों में परमात्म पालना पाने वाले वत्सों की थी।

जिस प्रकार बुरे व्यक्तियों के संग से मनुष्य खराब हो जाता है, उसी प्रकार सदा पावन एवं

कल्याणकारी शिव के साकार साथ के बिना पतित आत्माएँ पावन भी नहीं बन सकतीं। अतः दादा लेखराज ब्रह्मा के देहावसान के पश्चात् सृष्टि पर स्वर्ग स्थापन करने के अपने अधूरे कर्तव्य को पूरा करने के लिए परमपिता+परमात्मा ने पुनः उन्हीं आत्माओं का आधार लिया , जिन्हें आदि (सन् 1936-37) में चुना था। वही भागीदार, आदि माता तथा नज़दीकी संबंध की माता, जिनके द्वारा यह परमात्म कार्य आरम्भ हुआ था और जिनका सन् 1946-47 से पहले देहावसान हो गया था, पुनः अपने अगले जन्म या शरीर में भिन्न नाम-रूप के साथ इस ब्रह्माकुमारी संस्था के सदस्य बनते हैं। भागीदार की आत्मा पुनः **फर्रुखाबाद** जिले की **कायमगंज** तहसील में जन्म लेती है, आदि माता **दिल्ली** में जन्म लेती है और नज़दीकी संबंध की माता **अहमदाबाद** में ब्रह्माकुमारी बनने के बाद अफ्रीका में स्थित ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों की प्रभारी बनती है। (**नोटः**- माउण्ट आबू से उच्चारित मुरलियों और अव्यक्त-वाणियों के आधार पर ऐसी उपरिवर्णित मान्यता **आध्यात्मिक विद्यालय** के सभी जिज्ञासुओं की है।)

सन् 1969 में वह पूर्वजन्म की नज़दीकी सम्बन्धी माता ब्रह्माकुमारी बहन अहमदाबाद के **पालड़ी सेवाकेन्द्र** में उस फर्रुखाबादी व्यक्ति को ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा प्रतिपादित प्राथमिक (बेसिक) ज्ञान देने के निमित्त बनती है; किन्तु वे उनकी ईश्वरीय ज्ञान सम्बन्धी शंकाओं का समाधान नहीं कर पा तीं। संस्था के मुख्यालय में रहने वाले वरिष्ठ भाई-बहन भी इसमें विफल रहे और इस बहन ने शंकाओं के समाधान हेतु उन्हें उन सभी ज्ञान-मुरलियों की मुद्रित प्रतियाँ पढ़कर लौटाने हेतु देती रही जो परमपिता शिव ने दादा लेखराज ब्रह्मा के द्वारा उच्चारी थीं।

सन् 1969 से ही परमपिता शिव ने उस फरुर्खाबादी के शरीर में गुप्त रूप से प्रवेश करना प्रारम्भ कर दिया था; किन्तु उसको इसका आभास न था। परमपिता की ज्ञान मुरलियों का गहन अध्ययन क रते-2 उनको शिव ज्योतिर्बिन्दु की प्रवेशता होने के कारण न केवल अपनी शंकाओं का समाधान मिला , अपितु ब्रह्मा की वाणी, मुरलियों में छिपे गुह्य रहस्य भी उनकी बुद्धि में स्पष्ट होने लगे। उन्हें सन् 1969 के बाद परमपिता शिव के साकार पात्र, सृष्टि के आदि, मध्य और अंत की मुरलियों में बताए गए रहस्य पर पूरा निश्चय हो गया। इसके बाद उन्होंने सन् 1976 (बाप के प्रत्यक्षता वर्ष) से इस अध्ययन के द्वारा प्राप्त ज्ञान ब्रह्माकुमार-कुमारियों को सुनाना प्रारम्भ किया। न ब्रह्माकुमारी बहनों और न ही संस्था के तथाकथित वरिष्ठ भाई -बहनों ने उनके निष्कर्ष को स्वीकार किया, बल्कि उन्हें उससे रोकने के प्रयास जोर-शोर से शुरू कर दिए; किन्तु परमपिता शिव को तो सृष्टि पर प्रत्यक्ष होना ही था।

दिल्ली में यमुना किनारे के सेवाकेन्द्रों में कुछ ब्रह्माकुमार -कुमारियों को उनके द्वारा दिए गए ज्ञान के आधार पर यह निश्चय हो गया कि यह किसी मनुष्य का सुनाया गया ज्ञान नहीं , अपितु स्वयं परमपिता शिव (इनके तन) द्वारा सुनाया गया ईश्वरीय ज्ञान है, जिसके द्वारा ही विश्व का परिवर्तन होना है। इस प्रकार परमपिता के मुकर्रर रथ की अलौकिक ब्राह्मणों की दुनिया में सन् 1976 से दिल्ली में प्रत्यक्षता प्रारम्भ हुई। इस मुकर्रर रथ के द्वारा दिए गए ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ यह समझने लगे कि परमपिता शिव ही प्रजापिता (शंकर) का पार्ट बजा रहे हैं, जिन्होंने आदि (सन् 1936-37) में छोटी व बड़ी माता एवं दादा लेखराज की बुद्धि में ज्ञान का बीजारोपण किया था और अब अंत में ब्रह्मा के मुख से निकली मुरलियों की टीचर के रूप में व्याख्या द्वारा फिर से अविनाशी सुख-शांति का वर्सा दे रहे हैं। साथ ही उक्त दिल्ली में जन्मी कन्या, जिन्होंने आदि में माता के रूप में आदि देवी या जगदम्बा या आदि ब्रह्मा का पार्ट बजाया था, अब पुनः **जगदम्बा या ब्रह्मा** (बड़ी माँ) का पार्ट बजा रही हैं। वास्तव में दादा लेखराज ब्रह्मा की आत्मा ही उनमें प्रवेश कर यह पार्ट बजाती है और आदि-अंत में पार्ट बजाने वाली नज़दीकी संबंध की माता, जो पिछले जन्म में सन् 1942-47 के बीच में कुछ समय के लिए परमात्म परिवार की पालना का आधार बनी थी, अब निकट भविष्य में वैष्णवी देवी के रूप में इस एडवांस ज्ञान को सारे विश्व में फैलाने के निमित्त बनेगी तथा प्रजापिता के साथ विनाश के पहले

और बाद में भी **वैष्णवी देवी या विष्णु** (अर्थात् लक्ष्मी-नारायण) के रूप में पालना का पार्ट बजाएगी।

इस प्रकार उच्चारित मुरलियों के अनुसार उपर्युक्त तीन आत्माएँ ही आदि में और अब अंत में भी ब्रह्मा , शंकर और विष्णु के रूप में निराकार परमपिता शिव के तीन दिव्य कर्तव्यों - **'नई दुनिया की स्थापना, ब्राह्मणों की पुरानी दुनिया (ब्रह्माकुमारी विद्यालय) का विनाश तथा नई दैवी दुनिया की पालना'** के निमित्त बनती हैं।